Dainik Tribune Edition Delhi
16.4.2017 Page 12
Height 14.88cm Width 11.24 cm

बिछड़े मूक-बधिर बच्चे को आधार कार्ड से मिला परिवार

वडोदरा/नर्मदा, 15 अप्रैल (एजेंसी)

आधार कार्ड घर से बिछड़े एक बच्चे की जिंदगी में संजीवनी की तरह साबित हुआ। इसकी मदद से वह अपने घरवालों से फिर मिल पाया। परिजनों से बिछड़कर गुजरात के नर्मदा पहुंचा 12 वर्षीय मूक-बधिर संजय नागनाथ येन्कुर अगर आधार कार्ड बनवाने के लिए नहीं जाता तो जिंदगी में कभी भी महाराष्ट्र के लातूर जिले में अपने घर वालों से नहीं मिल पाता।

सुनने और बोलने में असमर्थ संजय ने 2014 में अपने भाई विजय से झगड़ा होने के बाद लातूर में अपने गांव हेन्चल को छोड़ दिया था। वह किसी तरह भटकते हुए अपने घर से 800 किलोमीटर दूर गुजरात में पहुंच गया। दोनों भाइयों के मां-बाप की मौत 2011 में हो चुकी थी और वे अपनी मौसी संगमाबेन मानेकराव गांटे के पास रह रहे थे।

वडोदरा रेलवे पुलिस ने पिछले वर्ष 22 मार्च को संजय को अकेले घूमते पाया। मूक-बधिर होने से उसके परिवार के बारे में पता करने का प्रयास असफल रहा। इसके बाद उसे नर्मदा जिले के राजपिपला में बाल सुरक्षा आयोग द्वारा संचालित सरकारी मूक-बधिर सरकारी स्कूल में भेज दिया गया। नर्मदा जिले के बाल सुरक्षा अधिकारी चेतन परमार ने बताया कि हमने पहले तो उसके घर के बारे में उससे कुछ जानकारी लेनी चाही, लेकिन कोई परिणाम हासिल नहीं हुआ। हमने उसका नाम आकाश रखा और उसका ऐडमिशन दूसरी क्लास में करा दिया।